मॉडल प्रश्नोत्तर

प्रश्न : रेणु जी के उपन्यास 'मैला आँचल' को राष्ट्रीय प्रतिनिधि उपन्यास कहना कहाँ तक उचित है? विश्लेषण कीजिए।

उत्तर : रेणु जी का 'मैला आँचल' मूलतः एक आँचलिक उपन्यास है जिसमें आँचलिकता का रंग बहुत गहरा और चटख है। किन्तु इसका एक सामाजिक-राजनीतिक फलक भी है जो युगीन भारत के यथार्थ को उद्घाटित करता है। इसमें स्थानीयता के साथ राष्ट्रीय राजनीति की प्रतिध्वनि भी है जिसे अनसुना नहीं किया जा सकता।

चूँकि रेणुजी राजनीति से होकर साहित्य की दुनिया में आए थे। अतः उनमें राजनीतिक अन्तर्विरोधों और उसकी गतिविधियों की एक गहरी समझ थी। यही वजह है कि वे इस उपन्यास में आजादी के पूर्व और बाद के भारत के राष्ट्रीय मुद्दों व स्थितियों की भी गहरी पड़ताल करते हैं। आलोचक डॉ. देवराज ने लिखा है कि- ''मैला आँचल' उपन्यास आँचलिक है, राष्ट्रीय है, सार्वभौमिक या फिर तीनों का एक्य है, कहना बड़ा मुश्किल है।' निःसंदेह, रेणुजी इस उपन्यास में सिर्फ ग्रामीण जीवन का ही प्रमाणिक चित्रण नहीं करते बल्कि उन राजनीतिक गतिविधियों और मूल्यों को भी उद्घाटित करते हैं जिससे उनकी आँचलिकता प्रभावित होती है।

'मैला आँचल' का मेरीगंज सिर्फ एक गाँव नहीं है बल्कि वह राष्ट्रीय राजनीति की एक प्रयोगशाला भी है। इस गांव में तत्कालीन सभी पार्टियों के प्रतिनिधि मौजूद हैं जिनके माध्यम से उनकी वास्तविकता खुलकर सामने आ जाती है। चूंकि रेणुजी ने स्वयं सभी पार्टियों को आजमाया था, अतः वे बावनदास के शब्दों में कहते हैं- 'सब पार्टी समान।' राजनीतिक पार्टियों के प्रति उपजी यह निराशा बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक है जो आज की भी सच्चाई है। बावनदास की हत्या वस्तुतः उन राजनीतिक मूल्यों की हत्या है जिसका स्वप्न कभी गाँधीजी ने आजाद भारत के लिए देखा था।

गांव की राजनीति का आधार जाति है और जातिगत आधार पर ही लोग पार्टियों के सदस्य बनते हैं। हरगौरी सिंह निचली जाति के नेता बालदेव को स्वीकार नहीं करता और इसीलिए उसका अपमान करते हुए वह कहता है- 'आप तो लीडर ही हो गए, आजकल कांग्रेस ऑफिस का चौका-बर्तन कौन करता है?' इस गांव के विभिन्न टोलों में जो विवाद है वह भी जातिवाद के कारण ही है। इसीलिए गांव का मलेरिया सेंटर भी राजनीति का शिकार हो जाता है, भले ही उसका उद्देश्य सामाजिक हो। यहां के लोग राजनीतिक मुद्दे को भी स्वार्थ के नजरिए से देखते हैं या फिर उसको महत्व नहीं दे

'मैला आँचल' भारतीय राजनीति का वह परिवर्तन-बिंदु है जहाँ से राष्ट्रीय राजनीति में मूल्यों के ह्रास को देखा जा सकता है। वस्तुतः आजादी के बाद कुछ भी नहीं बदला। रेणु जी ने स्वतंत्रता के बाद पैदा हुई राजनीतिक अवसरवादिता, स्वार्थ और क्षुद्रता को भी बड़ी कुशलता से उजागर किया है। गांधीवाद की चादर ओढ़े हुए भ्रष्ट

राजनेताओं का कुकर्म बड़ी सजगता से दिखाया गया है। राजनीति, समाज, धर्म, जाति, सभी तरह की विसंगतियों पर रेणु ने अपने कलम से प्रहार किया है।

'मैला आँचल' सिर्फ मेरीगंज की ही कहानी नहीं है, बल्कि यह भारत के उन तमाम आँचलिक भू-भागों में रहने वाले उन तबकों की दास्तां है, जो अभाव, अज्ञान-अशिक्षा, भुखमरी और बेबसी के चलते जानवरों-सा जीवन जीने को मजबूर हैं और कुछेक छुटभैये नेताओं और धनवानों के लालच की वजह से इधर-से-उधर धकियाए जा रहे हैं। मेरीगंज देश के उन पिछड़े गाँवों का प्रतीक है, जहाँ हालात आज भी नारकीय है।

कुल मिलाकर, हम कह सकते हैं कि 'मैला आँचल' में रेणुजी ने जिन मुद्दों का उठाया है वे वस्तुतः स्वतंत्रता के दहलीज पर खड़े केवल मरीगंज नहीं बल्कि समूचे देश से जुड़ा है। यद्यपि 'गोदान' में भी युगीन भारत का चित्र है किंतु वहाँ प्रेमचंद ने उन मुद्दों को परोक्ष रूप चित्रित किया है जबकि यहाँ 'मैला आँचल' में राष्ट्रीय मुद्दों की स्पष्ट अभिव्यक्ति है। अतः इस उपन्यास को राष्ट्रीय प्रतिनिधि उपन्यास कहना सर्वथा उचित है। रेणु जी की राजनीतिक दृष्टि इस उपन्यास को आँचलिकता के दायरे से बाहर निकालकर उसे एक बड़े परिप्रेक्ष्य से जोड़ देती है।